अध्याय 4

आपदा प्रबंधन के लिए सामुदायिक नियोजन

कहानी पढ़िए .....

26 दिसंबर 2004 को एक विशालकाय सुनामी लहर भारत के दक्षिणी तट से टकराई थी। मुख्य रूप से मछुआरों के समुदाय से सबसे अधिक गरीब और वंचितों को आघात सहना पड़ा था। समियापेट्टै भारत के तमिलनाडु के तटीय जिले का एक छोटा सा गाँव है। इस गाँव के लोग बहुत भाग्यशाली थे, कि उनको बचा लिया गया था। समिया पेट्टै के निकटवर्ती गाँवों में पांच गुनी अधिक मौतें हुई थीं। लेकिन समिया पेट्टै में इतने लोगों को बचा कैसे लिया गया था?

तमिलनाडु सरकार ने संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की सहायता से आपदा खतरा प्रबंधन कार्यक्रम शुरू किया था। कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य था, प्राथमिक उपचार, खोज और बचाव, शीघ्र चेतावनी आदि का प्रशिक्षण देकर स्थानीय समुदाय की क्षमता को बढ़ाना। स्थानीय प्रशासन और गैर सरकारी संगठनों ने ग्राम आपदा तैयारी और जवाबी कार्यवाही करने के लिए समुदाय का मार्ग दर्शन किया था। समुदाय क्योंकि आत्मनिर्भर था अत: उन्होंने प्रभावी ढंग से जवाबी कार्यवाही की और प्रिय जनों के मूल्यवान जीवन की रक्षा करने में सफल हो गए।

इस लघु कहानी का किसी क्षेत्र में आने वाले संकट के लिए सामुदायिक नियोजन की आवश्यकता और महत्व के विषय में स्पष्ट संदेश है।

आपदा के दौरान और बाद में भी पड़ोसी या समुदाय के लोग ही सबसे पहले जवाबी कार्यवाही करते हैं। ये ही लोग सामान्यत: सबसे पहले जवाबी कार्यवाही करते हैं। स्थानीय अधिकारी और गैर सरकारी संगठन तो बाद में प्रभावित लोगों की सहायता के लिए आगे आते हैं। जीवन रक्षा और भावी चोटों को कम करने के लिए, आपदा से पहले और बाद के कुछ घंटे बहुत महत्वपूर्ण और मूल्यवान होते हैं। बाह्य मदद को आपदा स्थल तक पहुँचने में प्राय: समय लग सकता है। यही वह स्थिति है, जब समुदाय के सुप्रशिक्षित सदस्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इन्हें जीवन रक्षक संपत्ति माना जाता है। इसके अतिरिक्त खतरा कम करने में भी समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इसकी शिक्षा और प्रतिबद्धता के बिना आपदा योजना अधूरी रह सकती है।

पिछले अध्याय में हमने विभिन्न संकटों के लिए उपयोगी मंदन उपायों पर चर्चा की थी। लेकिन किसी क्षेत्र में आने वाली आपदा का प्रभावी मंदन करने के लिए समुदाय का आपसी सहयोग और सरकार के साथ तालमेल बैठाकर पहल करना ज़रूरी है।

भारत सरकार आपदा प्रबंधन के विभिन्न क्षेत्रों में सामुदायिक क्षमताएं निर्मित करने की पुरजोर हिमायत करती है। यही नहीं वह समुदायों से आपदा प्रबंधन की योजनाएँ तैयार करने का भी आग्रह करती है, जिससे संकटों को रोका जा सके उनका मंदन किया जा सके और उनसे निबटने के लिए बेहतर तैयारी की जा सके। सरकार का मानना है कि आपदा के खतरों को कम करने के लिए मार्गदर्शन तथा समुदायों में नियोजन की प्रक्रिया में सहयोग करने में शिक्षक और छात्र, समुदाय के शिक्षित सदस्य होने के नाते अहम भूमिका निभा सकते हैं।

किसी भी आपदा प्रबंधन में पहल के लिए समुदाय को क्यों आगे आना चाहिए?

1. **सबसे पहले जवाबी कार्यवाही करने वाले लोग :** आपदा स्थल पर पहले से उपस्थित होने के कारण समुदाय ही सबसे पहले जवाबी कार्यवाही करता है।

2. **अधिकतम जानकारी का स्रोत :** जब किसी क्षेत्र में कोई आपदा आती है तो वहां के निवासियों और उनके संसाधनों के विषय में, उस क्षेत्र के निवासियों को ही बेहतर, विस्तृत और ताजा जानकारी होती है।

3. **आपदा से निबटने के लिए स्थानीय तंत्र :** अधिकतम आपदाएँ बार-बार आती हैं, इसीलिए उनसे निबटने के लिए पहले से प्रचलित एक पारंपरिक तंत्र होता है। यह तंत्र पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता रहता है। स्थानीय माहौल में तुरंत जवाबी कार्यवाही करने में यही तंत्र आदर्श होगा। लेकिन नई तकनीकों के द्वारा इसमें और सुधार किया जा सकता है।

4. **अपने ही हित में स्वयं सेवा :** ऐसी घटनाएं घटने पर तुरंत जवाबी कार्यवाही करना समुदाय की सहज प्रवृत्ति होती है। ऐसा इसलिए है कि बाहरी संसाधनों पर अत्यधिक निर्भरता से कार्यवाही में देर लग सकती है और वह बेकार हो सकती है। आइये एक कहानी पढ़े कि समुदाय की प्रतिबद्धता किसी आपदा की असुरक्षा को घटाने में और बेहतर तैयारी में कैसे सहायक हो सकती है।

सीखने वाले समुदाय की कहानी

पंद्रह साल का एक बालक, भरत सुखपार नामक गाँव मे रहता था। भरत के दादाजी रामजी सुखपार और आसपास के गाँव मे एक सम्माननीय व्यक्ति हैं। खंड (ब्लॉक) विकास अधिकारी ने उन्हें आपदा प्रबंध के विषय मे आयोजित सभा में आमंत्रित किया है। कोतूहलवश भरत ने अपने दादाजी, सरपंच और तलति (ग्राम पंचायत के सचिव) के साथ सभा में जाने का निर्णय ले लिया।

खंड विकास अधिकारी के कार्यालय में हुई सभा में क्या हुआ?

सभा में, उसने देखा कि सरकारी कार्यकर्त्ताओं के अलावा वहां आयु में उससे बड़े भी कुछ युवा स्वयंसेवक थे। वे समझा रहे थे कि किस प्रकार उनके प्रदेश भूकंप, बाढ़ और चक्रवातों से असुरक्षित हैं। उनके हाथ में ऐसे मानचित्र थे, जो पड़ोसी क्षेत्र में पहले आए चक्रवातों के संचलन को दर्शाते थे और ये क्षेत्र उनके गांव से केवल 15 कि.मी. ही दूर थे। क्षेत्र की असुरक्षा को देखते हुए खंड विकास अधिकारी ने, अपने खंड के प्रत्येक गांव के सरपंचों से, ग्राम आपदा प्रबंधन योजना बनाने के लिए कहा। भरत ने अपने दादाजी से कहा कि वह स्वयं सेवक के रूप में काम करना चाहेगा और इस प्रक्रिया में वह अपने दोस्तों और शिक्षकों को भी शामिल करेगा। खंड विकास अधिकारी ने सभा में उपस्थित सदस्यों को उनके गांवों की योजना बनाने के विभिन्न चरणों के विषय में समझाया।

सभा में भाग लेने के बाद भरत और उसके दादा जी इस विषय में पहल करने के लिए बहुत उत्सुक थे। वे जानते थे कि उनका गांव प्रायः आने वाली बाढ़ों और चक्रवातों से प्रभावित होता है। इनके परिणामस्वरूप अनेक मौतें होती हैं तथा संपत्ति और आजीविका को भी भारी हानि होती है। इससे सुखपार के गांव वालों को अपने जीवन को सामान्य बनाने में बहुत समय लग जाता है।

भरत ने गांव की सभा बुलाने में अपने दादा जी की मदद की। इससे पहले उसने अपने विद्यालय के साथियों से अपने समुदाय के लिए योजना बनाने के महत्व के विषय में चर्चा कर ही ली थी। उसमें सभा में उपस्थित होने के लिए घर-घर जाकर सूचना देने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। राम जी बहुत प्रसन्न थे कि उनका पोता इतनी रुचि ले रहा है और एक स्वयंसेवक के रूप में काम कर रहा है।

विद्यालय ने इस पहल में किस प्रकार सहायता की?

राम जी और सरपंच ने, अपने गांव में स्थित विद्यालय में इस सभा के आयोजन की जिम्मेदारी ली। प्रधानाचार्य और शिक्षकों ने भी सभा के आयोजन में रामजी और सरपंच की मदद की। उन्होंने कक्षाओं में घोषणा कर दी कि सभी विद्यार्थियों के अभिभावक आपदा प्रबंधन पर चर्चा करने के लिए सभा में उपस्थित हों। गांव के मंदिर के पुजारी पंडित रामदास और मस्जिद के मौलाना अब्दुल रजाक ने भी गांव वालों को सभा में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने समझाया भी कि अपनी सुरक्षा के विषय में सोचना कितना ज़रूरी है। प्राथमिक उपचार केन्द्र के डाक्टर,गांव के आंगनबाड़ी कार्यकत्ताओं, महिला स्वयंसेवी संगठन की नेता, डाकपाल तथा अन्य प्रमुख व्यक्तियों को भी सभा के आयोजन की सूचना दी गई।

सुखपार के गांव वासियों ने शाम को प्राथमिक विद्यालय में सभा बुलाने का फैसला किया। शाम के समय लोग काम से लौट आते हैं तथा औरतें भी घरेलू काम-धंधों को निबटा कर कुछ खाली सी हो जाती है। इस क्षेत्र में यह अपनी तरह की पहली सभा थी। इसीलिए खंड विकास अधिकारी ने भी ग्राम आपदा तैयारी और जवाबी कार्यवाही योजना के विषय में मार्गदर्शन करने के लिए सभा में भाग लिया। उनकी राय में ग्राम योजना को बनाने के लिए गांववालों को ही आगे आना चाहिए। इसका कारण यह है कि वे ही स्थानीय, परिस्थितियों को बेहतर जानते हैं। उन्हें ही पता है कि वहां कौन-कौन सी आपदाएं आती हैं और उनसे निबटने के लिए उनके पास क्या संसाधन हैं।

राम जी 70 वर्ष से अधिक आयु के वृद्ध सज्जन हैं। गांव की उस सभा में उन्होंने गांववालों पर पड़ने वाली विभिन्न आपदाओं के दुष्प्रभावों की चर्चा की। उन्होंने आगे बताया कि वे इन गांव वालों को प्राय: आने वाली आपदाओं से होने वाली पीड़ाओं को झेलते हुए देख चुके हैं।

उनकी बातें सुनते हुए गांववालों ने महसूस किया इन आपदाओं से पड़ने वाले दुष्प्रभावों को कम करने के कई तरीके हैं। सभा के बीच से, किशोर वय का श्यामू खड़ा हुआ और अपने अनुभव बताए कि कैसे वह और उसके दोस्त, पिछले वर्ष आई बाढ़ के समय रात भर नदी के तटबंधों की रक्षा करते रहे थे। तटबंध को टूटने से बचाने के लिए वे रेत के बोरों का उपयोग कर रहे थे।

सभा में खंड विकास अधिकारी ने गांव वालों को ग्राम आपदा प्रबंधन समिति गठित करने के लिए कहा। यह समिति समुदाय को सदस्यों का ग्राम आपदा प्रबंधन योजना बनाने में मार्ग दर्शन और मदद करेगी। सरपंच ने खड़े होकर कहा, ''मैं समिति का अध्यक्ष बनना चाहता हूँ'' जैसे ही सरपंच ने अपनी सेवाएं देने की बात कही, वैसे ही गांव के अन्य सदस्यों, विद्यालय के प्रधानाचार्य, डाक्टर, महिला स्वयंसेवी समूह की नेता तथा गांव के सम्मानित वरिष्ठ ग्राम वासी राम जी ने भी इस समिति का सदस्य बनने की सहमति दे दी। गांव को सुरक्षित बनाने के लिए गांव वालों का उत्साह देखकर खंड विकास अधिकारी को भारी अचंभा हुआ।

क्रिया कलाप-1: ऊपर की चर्चा से क्या आप ग्राम आपदा प्रबंधन समिति के सदस्यों की सूची बना सकते हैं?यदि आप किसी नगर में रह रहे हैं और वहां कोई आवासी कल्याण संस्था है, तो अपने शिक्षक से इस बात की चर्चा कीजिए कि इस समिति के सदस्य कौन-कौन हो सकते हैं। उनकी एक सूची भी बनाइये।

एक गांववासी ने पूछा ''लेकिन श्रीमन्। इस समिति की भूमिका क्या होगी?'' खंड विकास अधिकारी ने बताया कि इस समिति की मुख्य जिम्मेदारी समुदाय के सदस्यों में जागरूकता पैदा करने की होगी। इससे वे किसी भी संकट के दुष्प्रभावों का सामना कर सकेंगे तथा समुदाय के सदस्यों का ग्राम आपदा प्रबंधन योजना बनाने में मार्ग दर्शन भी कर सकेंगे। तभी कॉलेज में पढ़ने वाली युवती सीमा ने कहा ''लेकिन तब हमें दुष्प्रभावों को कम करने के लिए कुशल व्यक्तियों की ज़रूरत भी होगी, जो प्राथमिक उपचार और खोज तथा बचाव में भी प्रशिक्षित हों। राम जी ने कहा ''हाँ। तुम ठीक कहती हो। हमें अपनी कुशलताओं में वृद्धि करनी होगी ताकि हम आपदा पड़ने पर बेहतर ढंग से जवाबी कार्यवाही कर सकें।''

रामजी ने खंड विकास अधिकारी से कहा ''श्रीमन। इस मामले में हमसे क्या करने की आशा की जाती है।'' खंड विकास अधिकारी ने कहा कि ग्राम आपदा प्रबंधन दल बनाने की जरूरत भी है। ''लेकिन आपदा प्रबंधन दल के सदस्य करेंगे क्या''? एक अन्य ग्रामवासी ने पूछा। इस दल में ऐसे सदस्य होंगे जिन्हें ऐसे कामों में प्रशिक्षित किया जाएगा, जिनकी उस परिस्थिति में सबसे अधिक जरूरत पड़ती है। सीमा ने फिर से कहा ''मेरे कॉलेज में हमें मूल प्राथमिक उपचार में प्रशिक्षित किया गया है। क्या हम इस समिति के सदस्य बन सकते हैं?'' प्राथमिक उपचार केन्द्र के डाक्टर यह जान कर बड़े खुश हुए कि यहाँ इस गांव में ऐसी युवती भी है, जिसे प्राथमिक उपचार की जानकारी है। उसने उत्तर दिया ''हाँ! तुम बन सकती हो।'' खंड विकास अधिकारी ने पुनः इस बात की पुष्टि की ''क्यों नहीं सीमा! तुम बन सकती हो।'' चाय की दुकान वाले 'काका' ने गर्वपूर्वक धीरे से खंड विकास अधिकारी को बताया कि सीमा उसकी बेटी है। ''मैंने उसे कॉलेज में पढ़ाने के लिए काफी दु:ख झेलें हैं। उच्च शिक्षा पूरी करने के बाद मैं इसके लिए एक सुयोग्य वर की खोज में हूँ।'' बी.डी.ओ. हल्के से मुस्कराए और कहा 'काका आप की बेटी बहुत गुणवती है। आप इसे प्रेरित करते रहें, ताकि यह अपने जीवन में निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे।'

इधर गांव वालों में कुछ गंभीर चर्चा हो रही थी कि सुखपार गांव में किस-किस प्रकार आपदा प्रबंधन दल बनाए जाएंगे। गांव वालों की ओर मुड़कर बीडीओ ने कहा ''क्योंकि सुखपार में बाढ़ और चक्रवात आने का खतरा ही प्रायः बना रहता है, अतः हमें सबसे पहले इन्हीं दो संकटों पर ध्यान देना है।'' एक कोने, में बैठे 'काका' ने कहा ''सरपंच जी! हम सब तो आधे-अधूरे पढ़े हैं, हम किस प्रकार की महत्वपूर्ण कुशलताएँ प्राप्त कर सकते हैं?''

सरपंच ने कहा ''हमें ऐसे लोगों की ज़रूरत है, जो अच्छे तैराक हों और कद-काठी मजबूत हो, ताकि वे गांव वालों को बचा सकें। हमारे डाक्टर साहब को प्राथमिक उपचार केन्द्र में मदद की ज़रूरत होगी ताकि वह स्वयं गंभीर रोगियों पर ध्यान दे सके तथा प्राथमिक उपचार की जिम्मेदारी दूसरे लोग संभाल सकें। सीमा तो पहले से ही प्रशिक्षित है तथा हमारी एएनएम की बहन भी उनकी काफी मदद कर सकती है। टेलीफोन और बिजली के बंद हो जाने पर सूचनाओं के लिए बादल के रेडियों का सहारा लेना पड़ेगा। बेचारे बच्चे को अपने रेडियो के आकर्षण के कारण सदैव झिड़कियाँ सहनी पड़ती हैं।''

इसके बाद समूह में बातें हुई, चर्चा हुई, काना फूसी हुई, गरमा-गरमी हुई, मतलब यह कि निम्नलिखित दल बनाने के लिए नाम चुनने का निर्णय लेने के लिए जो कुछ होना था, वह सब हुआ :

- पूर्व चेतावनी और संचार दल
- दुर्घटना स्थल खाली करना और अस्थायी आपदा प्रबंधन दल
- खोज और बचाव दल
- स्वास्थ्य और प्राथमिक उपचार दल
- राहत समन्वय दल
- पानी और स्वच्छता दल

कुशलता के आधार पर गांव वालों ने प्रत्येक दल के स्वयं सेवकों के नामों की सूची बना ही ली

लगभग 2–3 दिन बाद भरत और उसके दोस्तों ने मिलकर, सुखपार गांव के सक्रिय प्रतिनिधियों की एक बैठक बुलाई। प्राथमिक विद्यालय में आयोजित इस बैठक में विभिन्न आपदा प्रबंधन दलों में स्वयं सेवकों के नामों पर निर्णय लेना था। एक कोने में बैठे राम जी अपने पोते को ध्यान से देख रहे थे। बोले "बच्चों! आपदा प्रबंधन दल के सदस्यों का निर्णय लेने से पहले आपको अपने गांव की असुरक्षा के बारे में जान लेना चाहिए। हमें एक मानचित्र बनाकर उसमें गांव के असुरक्षित क्षेत्रों को अंकित कर देना चाहिए। इसमें उन घरों की स्थिति भी दिखानी चाहिए जिनमें असुरक्षित बूढ़े बीमार और छोटे बच्चे रहते हैं। स्वयं सेवकों के नाम लेने पर गौरी नाम की युवती आगे आई। गौरी सुंदर रंगोली बनाने में कुशल है उसने उपस्थित लोगों की मदद से स्कूल के बरामदे में मानचित्र बनाने की बात कही। समुद्री तट को सुखपार का सबसे अधिक महत्वर्पूण प्राकृतिक लक्षण माना गया। इसके बाद गौरी ने गांव की सीमा बनाई और उसमें महत्वपूर्ण स्थल जैसे प्राथमिक उपचार केन्द्र, थाना, और सहकारी बैंक को रंगोली में अंकित कर दिया गया। बंसी की इच्छा थी कि बाजार को सावधानी से दिखाया जाए और उसमें उसकी परचून की दुकान को प्रमुखता से दिखाया जाए। उसके इस निवेदन पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। कुएँ और तालाबों का भी अंकन हुआ। इसके बाद उनके संदर्भ में जितनी अच्छी तरह से अधिक से अधिक घरों को दिखाया जा सकता था, दिखाया गया।

जब गांव का मानचित्र पूरा हो गया तो भरत आगे आया और बोला "अब हम देखेंगे कि हमारे इस सुंदर गांव सुखपार को कौन डराता है। गांव के पहलवान धरम सिंह ने कुछ–कुछ गुर्राते हुए कहा "जरा उसका नाम तो बताओं हम उसे उसके सही ठिकाने पर भेज देंगे।" भरत ने कहा "सही है। आपको उसे वापस समुद्र में भेजना होगा।" धरम सिंह ने हंस कर कहा "क्या हमें इस युग में भी समुद्री डाकुओं से खतरा है।" भरत ने उत्तर दिया "और भी ज्यादा खतरा है। हमें खतरा है उस चक्रवात से जो समुद्र से आता है तथा उसे भूकंप का भी डर है जो धरती के नीचे से उठता है।" तभी अहमद ने सलेटी चिमनी की ओर संकेत करते हुए कहा "हमें उस गैस से भी डर है, जो आर.के. रसायन का कारखाना फैला सकता है।"

इस पर गांव का डाकिया राजू बोला ''यदि हमें उन सभी से निबटना है जिनसे हमें खतरा है तो गांव की उत्तर की सीमा पर स्थित राजमार्ग को भी अंकित करें। इसी राजमार्ग पर जब-तब दुर्घटनाएं होती रहती हैं। हर साल कोई न कोई वाहन हममें से किसी एक से या आपस में टकरा जाते हैं।'' भरत ने कहा ''इससे आगे हमें यह देखना है, किन घरों में ऐसे सदस्य हैं, जिन्हें गांव में आपात-स्थिति पैदा होने पर सबसे पहले देखभाल की जरूरत होगी।'' इसके बाद ऐसे सभी घरों पर असुरक्षित लिख दिया गया, जिनमें बूढ़े, शिशु, छोटे बच्चे, गर्भवती महिलाएं, दूध पिलाने वाली माताएं और विकलांग व्यक्ति रह रहे थे। इसके साथ ही समुद्र तटीय घरों और सड़क के किनारे वाले घरों पर भी 'अ' अंकित कर दिया गया।

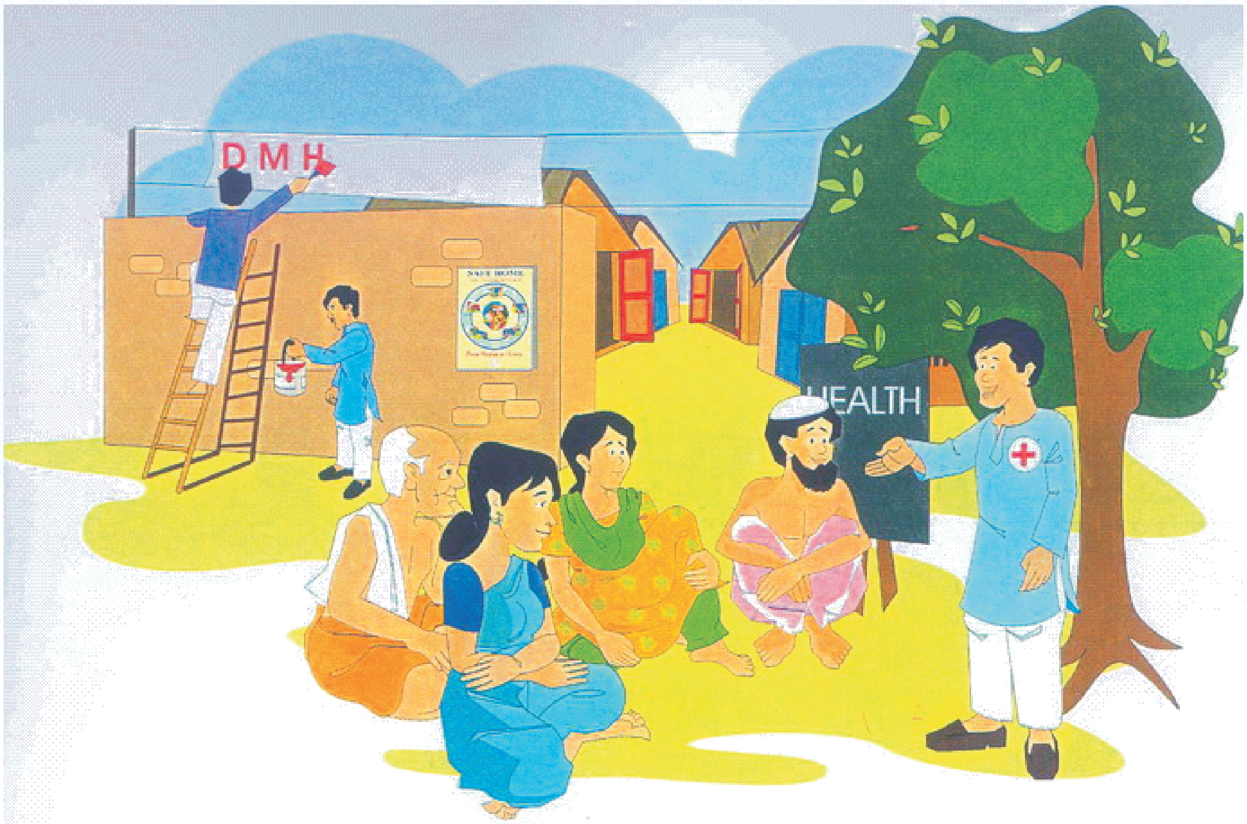

विभिन्न आपदा खतरा प्रबंधन तरीकों में ग्रामवासियों को प्रशिक्षण

फिर गौरी ने कहा ''क्या नक्शे में मुझे अपने गांव के सभी संभावित खतरों और जिम्मेदारियों का दिखाना है? मैं तो यह भी अंकित करना चाहती हूँ कि मेरा सुखपार कितना मजबूत है।''

''हाँ'' कहा मौलाना अबदूल रजाक ने'' भले ही मैं सत्तर साल का हो गया हूँ लेकिन मेरी आवाज अब भी गाँव की हर गली में गूंज जाती हैं, जब मैं मंस्जिद के लाउड स्पीकर पर लोगों को नमाज़ के लिए बुलाता हूँ। मेरा विश्वास कीजिए,

जब मुझे आने वाले चक्रवात की चेतावनी देनी होगी तो मेरी आवाज काँपेगी नहीं, लेकिन खुदा मुझे आशा है कि ऐसा दिन कभी नहीं आएगा।''

भरत ने कहा ''प्रारंभिक चेतावनी के रूप में हम मस्जिद को सुखपार का सबसे बढ़िया स्थान देंगे। क्या हम अपने गांव की अन्य ताकतों की पहचान कर सकते हैं?'' इस पर विद्यालय के प्रधानाचार्य ने कहा ''यदि लोगों को आपदा के समय अपने घर छोड़ने पड़े तो मेरे विद्यालय के अहाते को एक सुरक्षित स्थान के रूप में प्रयोग कर सकते हैं। प्रभावित लोग एक निश्चित अवधि तक वहाँ रह भी सकते हैं।

अब बंसी की बारी थी, वह बोला ''मुझे बताइये कि आपको क्या राशन की भी ज़रूरत होगी। जितना मुझ से बन पड़ेगा, दूंगा। यह गांव के लिए मेरा योगदान होगा।'' तभी चंपा देवी ने ताना मारा ''हम तो सोचते थे कि केवल कंकड़ ही मुफ्त में मिलते हैं।'' इस बात पर सभी हँस पड़े। फिर एक-एक करके ऐसे परिवारों की पहचान की गई, जिनके पास ट्रैक्टर, ट्रक, तिरपाल, और जैनरेटर थे।

अंत में लोगों का ध्यान गांव में उपलब्ध संसाधनों की ओर गया। आपदा प्रबंधन दल तो पहले ही बन चुके थे। अतः प्रत्येक दल के सदस्य के घरों पर उचित संकेत चिन्ह बना दिए गए। राजू डाकिया कब पीछे रहने वाला था, उसने भी अपना दावा पेश कर दिया कि वह और उसकी साइकिल फिली-पीडीज की तरह दौड़ लगाएंगे। (मैराथन दौड़ के पीछे यूनानी दंत कथा) जब भरत ने भावी संदर्भ के लिए चार्ट पेपर पर रंगोली की एक नकल बनाई तो गौरी खुशी से झूम उठी। गौरी ने एक मजबूत और आत्मनिर्भर सुखपार का मानचित्र बनाने का काम पूरा कर लिया था।

क्षमता निर्माण

जल्दी ही आपदा प्रबंधन समिति की पहली बैठक हुई। शीला जी पहले से ही कुछ पूछने के लिए तैयार बैठी थीं। वे बोलीं ''दल की पहचान तो ठीक है। लेकिन जब तक आपदा प्रबंधन समिति के हमारे सदस्य प्रशिक्षित नहीं होंगे, तब तक वे अच्छा काम नहीं कर पाएंगे। इस विषय में आपकी क्या योजना है।

राम जी फिर बचाव के लिए आगे आए, ''हमारी सरकार से पहले ही बात हो गई है। वह इसमें मदद के लिए तैयार है। पंचायत और आपदा प्रबंधन समिति को इसी तरह के पहल करने वाले अन्य गांवों के साथ तालमेल बैठाना होगा तभी दलों को प्रशिक्षण के लिए ज्ञान साधन व्यक्ति मिल पाएंगे।''

दूसरी बैठक में रामजी के पास एक सूची थी। खंड कार्यालय से सलाह करके हमने अलग-अलग आपदा प्रबंधन के लिए निम्नलिखित संस्थाओं को चुना है :

- पूर्व चेतावनी और संचार : हमारे जिला मुख्या में सेना की छावनी
- दुर्घटनाग्रस्त स्थान खाली कराना तथा अस्थायी आश्रय : प्रबंध जिला पुलिस विभाग

- खोज और बचाव: जिला मुख्यालय में दमकल
- स्वास्थ्य और प्राथमिक उपचार : सेंट जान अस्पताल केन्द्र के डाक्टर
- राहत समन्वय : राष्ट्रीय नागरिक सेवा केन्द्र
- पानी और स्वच्छता : जिला पंचायत द्वारा एक जल-स्वच्छता निरीक्षक भेजा जा रहा है।

अब सरपंच जी के बोलने की बारी थी, ''इसके अलावा हमें अपने राजमिस्त्रियों को भी भूकंप/चक्रवात रोधी मकान बनाने का प्रशिक्षण देना चाहिए। वे इस तकनीक को पुनः मजबूतीकरण कहते हैं। लेकिन हमारे कुछ टूटे-फूटे मकान इस तकनीक से थोड़ा बहुत लाभ उठा सकते हैं। याद रहे कि बी डी ओ साहब उस दिन कह रहे थे कि वे इस प्रकार के प्रशिक्षण के लिए कुछ कुशल राजमिस्त्रियों की व्यवस्था कर सकते हैं।''

"और हाँ! जब मैं जिला मुख्यालय गया तो मैंने कुछ मकानों में इन नलों को लगे देखा। पूछने पर पता चला कि यह छत के वर्षा जल को संग्रहित करने का नलों का तंत्र है। संग्रहित जल घरेलू कामों में उपयोग किया जा सकता है। इसे वे छत पर वर्षा जल संग्रह कहते हैं। मैं सोचता हूँ, हम क्या हम लोग ऐसा नहीं कर सकते। इससे हर साल गर्मियों में होने वाली पानी की कमी को दूर कर सकते हैं।"

"सूखे के दिनों में यदि हम अपने खेतों में परंपरागत जलाशयों में थोड़े से वर्षा के जल का संग्रह कर सकते हैं तो अपने घरों के लिए भी ऐसा क्यों नहीं कर सकते।"

अगले छः महीनों में एक-एक करके सभी प्रशिक्षण कार्य पूरे कर लिए गए। सुखपार के रंग रूप में तो कोई बदलाव नहीं नजर आया लेकिन कुछ नए निर्माण कार्य जारी थे। परन्तु भावनात्मक दृष्टि से यह बहुत अधिक आत्मविश्वासी समुदाय बन गया था।

योजना विकास

कभी किसी को खतरे से पीठ नहीं फेरनी चाहिए और डर कर नहीं भागना चाहिए। ऐसा करके आप खतरे को दुगुना कर देते हैं। यदि आप बेझिझक इस का तुरंत मुकाबला करते हैं तो आप खतरे को आधा कर देंगे।

सर विंस्टन चर्चिल

एक दिन भरत पहाड़ी पर स्थित मस्जिद में गया। मौलवी से मिलकर उसने कहा "आपको याद है न, जब आपने गांव की गलियों में गूंजती अपनी आवाज की चर्चा की थी। अब वह समय आ गया है और सुखपार को आप की आवाज की जरूरत है।" इसके बाद उसने बाहर की ओर समुद्र पर दृष्टि डाली।

उस बूढ़े व्यक्ति ने एक भी शब्द न ही कहा, न तो उनकी पलकें झपकीं, और न ही उनकी झुर्रियों में कोई खिचाव आया। वह उठे और माइक पर जाकर घोषणा करने लगे "अल्लाह के नाम पर भाग कर विद्यालय में चले आइये। समुद्री डाकू आ रहा है। चक्रवात की चेतावनी मिली है।"

रामजी आश्चर्य चकित थे। लेकिन हर स्त्री और पुरुष अपने-अपने काम पर तैनात हो गए। स्थान खाली कराने वाले दल ने सबसे पहले बूढ़ों और विकलांगों को सुरक्षित स्थान पर पहुचाया। गांव के टेलीफोन बंद हो गए थे। डाकिया सहायता मांगने अपनी साइकिल पर खंड मुख्यालय के लिए चल पड़ा। प्रधानाचार्य ने अपने विद्यालय में लोगों के ठहरने की व्यवस्था करनी शुरू कर दी। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के डाक्टर ने उन बूढ़ों की देखभाल शुरू कर दी, जिनकी सांस फूल गई थी। बंसी ने आपदा प्रबंधन समिति के सदस्यों के लिए अपने गोदाम के दरवाजे खोल दिए। जिन लोगों को भीड़ में मामूली चोटें आई थी उन्होंने प्राथमिक उपचार के लिए डाक्टर को परेशान नहीं किया।

दो घंटे बाद जब भरत विद्यालय के हाल में आया और लोगों से अपनी ओर ध्यान देने के लिए कहा, तब दो हजार आँखे उसकी ओर देखने लगीं। कोई नहीं रोया। केवल कुछ छोटे बच्चे रो रहे थे।

भरत बोला ''शत्रु कभी न लौटने के लिए वापस चला गया है।''

सभी ने राहत की सांस ली और प्रार्थना करने लगे।

''लेकिन तुम कैसे जानते हो कि चक्रवात फिर कभी नहीं लौटेगा।'' बंसी ने पूछा।

''चक्रवात का जिक्र कब किसने किया था? हमारा शत्रु तो हमारा अज्ञान है और आपदा की तैयारी में ढील-ढाल थी।''

कोई भी व्यक्ति अपने स्थान से नहीं हिला। जिस वायरमैन ने एक पवित्र अभ्यास के लिए टेलीफोन की लाइन काट दी थी वही अकेला ऐसा व्यक्ति था जिसने इसे सफल नकली अभ्यास (मौकड्रिल) के लिए भरत की पीठ थपथपाई।

प्रिय विद्यार्थियों! आपने ऊपर कही गई कहानी अब पढ़ ली है। इससे आप को ग्राम आपदा प्रबंधन योजना की तैयारी के महत्व और इसमें उठाए गए कदमों के विषय में स्पष्ट जानकारी मिल गई है। कक्षा नौ के विद्यार्थी होने के नाते आप भी लगभग भरत की आयु के ही हैं। आप भी भरत की तरह आपदा के दौरान अपने समुदाय की बेहतर तैयारी प्रभावी जवाबी कार्यवाही में मदद कर सकते हैं।

वेब संसाधन

और जानकारी के लिए निम्न वेबसाइट को देखें :

www.undp.org.in : Website of UNDP India

http://www.ndmindia.nic.in/ Website of National Disaster Management Division.

http://ndma.gov.in/wps/portal/NDMAPortal: Website of National Disaster Management Authority, Government of India.

अभ्यास

1. सुखपार गांव की कहानी में घटी घटनाओं के क्रम तथा आपदा खतरे के प्रबंधन में उनके महत्व को पहचानिए।
2. समुदायों की सभा से पहले के सुखपार से नया सुखपार किस प्रकार भिन्न है?
3. भरत के किन गुणों ने उसे गांव के अन्य लोगों से भिन्न बना दिया है?क्या आप के अपने समुदाय में ऐसे गुण विकसित करने की संभावना है? पता लगाइये।
4. आपदा प्रबंधन दलों के लिए कौन-कौन से क्षेत्र शामिल किए गए थे?
5. कहानी में बताई गई निर्माण से संबंधित दो मंदन तकनीकें कौन सी थी?
6. आपदा तैयारी और जवाबी कार्यवाही योजना की क्या विषय वस्तु थी?